

E-ISSN: 2709-9369  
P-ISSN: 2709-9350  
[www.multisubjectjournal.com](http://www.multisubjectjournal.com)  
IJMT 2024; 6(7): 01-05  
Received: 01-04-2024  
Accepted: 04-05-2024

**खुशबू कुमारी**  
शोध-छात्रा, विश्वविद्यालय  
अर्थशास्त्र तिलकामौंझी भागलपुर  
विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार,  
भारत

## भारत में दुग्ध उत्पादों की स्थिति एवं उसमें गंगा डेयरी का योगदान

**खुशबू कुमारी**

### सारांश

भारत में उत्पादित कुल दूध का अनुमानित 50–55% स्कंदन, शुष्कन और किण्वन जैसी प्रक्रियाओं का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के स्वदेशी पारंपरिक दूध उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है। स्क्रेप्ड सरफेस हीट एक्सचेंजर (एसएसएचई) के नवाचार के साथ, पारंपरिक मिठाई उत्पादों का निर्माण भारतीय डेयरी उद्योग द्वारा आसानी से किया जा रहा है। भारत में लगभग 15 संयंत्रों ने निरंतर खोआ बनाने वाली मशीन का उपयोग करके 1–4 टन के दैनिक उत्पादन के साथ खोआ का औद्योगिक उत्पादन शुरू किया है। भारत में लगभग 9,00,000 टन घी का उत्पादन होता है जिसका मूल्य 85,000 मिलियन है। मक्खन के उत्पादन में छाछ एक उपोत्पाद है। अनुमान है कि प्रत्येक किलो घी बनाने पर लगभग 55 किलो छाछ पिब का उत्पादन होता है जिससे लस्सी बनता है उस लस्सी की कीमत लगभग 25,000 मिलियन है। एसोसिएटेड चॉबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एसोचौम) के अनुसार, भारतीय डेयरी उद्योग का मूल्य 2015 तक 5 लाख करोड़ तक पहुंच गयी थी, अवधि के अंत में दूध उत्पादन 190–200 मिलियन टन था। भारतीय डेयरी उद्योग प्रति वर्ष 10.0% की दर से बढ़ रहा है। देश में उत्पादित कुल दूध का केवल 30% ही संगठित डेयरी उद्योग द्वारा संसाधित किया जा रहा है। लगभग 10 वर्षों की अवधि में इस स्तर को कम से कम 50% के स्तर तक बढ़ाने की पर्याप्त गुंजाइश मौजूद है। स्वदेशी डेयरी आधारित मिठाइयों की बेहतर पैकेजिंग समय की मांग है। स्वच्छता, ऊर्जा की आवश्यकता और पर्यावरण सुरक्षा के मुद्दों को ध्यान में रखते हुए, स्वदेशी दूध की मिठाइयों के निर्माण में मशीनीकरण अभी भी पूर्ण नहीं किया गया है।

**कुटशब्द:** स्कंदन, शुष्कन, किण्वन, नवाचार, पारंपरिक, औद्योगिक, संसाधित

### प्रस्तावना

भारत में उत्पादित कुल दूध का अनुमानित 50–55% स्कंदन, शुष्कन और किण्वन जैसी प्रक्रियाओं का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के स्वदेशी पारंपरिक दूध उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है। खोआ से बनी मिठाइयों की कीमत 1,30,000 करोड़ से ज्यादा आंकी गई है। खोआ का उपयोग विभिन्न प्रकार की पारंपरिक मिठाई (मिठाइयों) जैसे पेड़ा, बर्फी और गुलाबजामुन बनाने में किया जाता है। देश में लगभग 45,000 मिलियन मूल्य का लगभग 9,00,000 टन खोआ का उत्पादन होता है। एक अन्य महत्व का दुग्ध उत्पाद है छेना, जो मानकीकृत दूध के अम्ल स्कंदन द्वारा उत्पन्न होता है। इसका उपयोग छेना आधारित मिठाइयों जैसे संदेश, चमचम, रसगुल्ला आदि तैयार करने के लिए किया जाता है। भारत में 6,000 मिलियन मूल्य का लगभग 1,20,000 टन छेना का उत्पादन किया जाता है। खोआ से बनी मिठाइयों की कीमत 1,30,000 करोड़ से ज्यादा हो सकती है। स्क्रेप्ड सरफेस हीट एक्सचेंजर (एसएसएचई) के नवाचार के साथ, पारंपरिक मिठाई उत्पादों का निर्माण भारतीय डेयरी उद्योग द्वारा आसानी से किया जा रहा है। भारत में लगभग 15 संयंत्रों ने निरंतर खोआ बनाने वाली मशीन का उपयोग करके 1–4 टन के दैनिक उत्पादन के साथ खोआ का औद्योगिक उत्पादन शुरू किया है। भारत में लगभग 9,00,000 टन घी का उत्पादन होता है जिसका मूल्य 85,000 मिलियन है। मक्खन के उत्पादन में छाछ एक उपोत्पाद है। अनुमान है कि प्रत्येक किलो घी बनाने पर लगभग 550 ग्राम छाछ पिब का उत्पादन होता है। लस्सी की कीमत लगभग 25,000 मिलियन है।

### विश्लेषण एवं परिणाम

भारत के मुख्य डेयरी उत्पाद एवं व्यवसायिक स्थिति निम्न प्रकार है—  
प्रसंस्कृत पनीर, पनीर स्प्रेड, स्वादयुक्त और मसालेदार पनीर जैसे विभिन्न प्रकारों सहित संगठित पनीर बाजार का मूल्य 4.5 बिलियन है। प्रसंस्कृत पनीर जो कुल पनीर बाजार का 60% हिस्सा मानता है, उसकी कीमत 2.7 बिलियन है। अगला सबसे लोकप्रिय प्रकार पनीर स्प्रेड है जो कुल प्रसंस्कृत पनीर बाजार में –30% की हिस्सेदारी का दावा करता है। बताया गया है कि बाजार –15% की दर से बढ़ रहा है। पनीर के टुकड़े, स्लाइस और टिन्स का बाजार बढ़ रहा है।

**Corresponding Author:**

**खुशबू कुमारी**  
शोध-छात्रा, विश्वविद्यालय  
अर्थशास्त्र तिलकामौंझी भागलपुर  
विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार,  
भारत

अमूल ब्रांड के साथ गुजरात सहकारी दूध विपणन महासंघ (जीसीएमएमएफ) भारत में ब्रांडेड पनीर बाजार में मुख्य ऑपरेटर बना हुआ है। ब्रिटानिया इंडस्ट्रीज 1990 के दशक के मध्य में डायनामिक्स डेयरी इंडस्ट्रीज के साथ एक समझौते के माध्यम से पनीर बाजार में शामिल हो गई। फिनलैंड के वैलियो द्वारा डिजाइन किया गया प्लांट अमेरिका के श्रेडर फूड्स के साथ प्रौद्योगिकी गठजोड़ पर चलाया जाता है। फ्रांसीसी पनीर प्रमुख, फ्रैमेजरीज बेल, एक 10 अरब फ्रांसीसी फ्रैंक संगठन, ने ला वाचे किरिट यानी "द लाफिंग काउ" के साथ भारतीय बाजार में प्रवेश किया है। बेल उत्पाद का उत्पादन विशेष रूप से भारतीय बाजार के लिए पोलैंड में किया जाएगा। उम्मीद है कि फ्रैमेजरीज बेल लाफिंग किरिट (क्यूब रूप में मलाईदार पनीर) और बेबीबेल (मोम कोटिंग के साथ अर्ध-कठोर, सैंडविच के लिए उपयुक्त) लॉन्च करके अपने उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार करेगी।

भारत में विदेशी ब्रांडों में शामिल हैं। इटली से प्रोवोलोन, कोल्बी, मोत्जारेला और परमेसन, डच से चेडर, गुएवे। अमेरिका स्थित फिलिप मॉरिस, जो पहले अपना क्राफ्ट चीज ब्रांड लेकर आया था, ने बाजार में महत्वपूर्ण हुआ है। उपस्थिति हासिल कर ली है। बाकी बाजार वेरका, नदिनी, विजया और वाडीलाल के बीच फैला हुआ है।

डाबर ने अपनी संयुक्त उद्यम कंपनी डाबोन इंटरनेशनल के माध्यम से डेयरी उत्पाद बाजार में कदम रखा था। कंपनी ने ले बॉन ब्रांड के तहत पनीर की 20 विभिन्न किस्मों की उत्पाद श्रृंखला का दावा किया। पनीर की मांग लगभग 11.00 बिलियन तक बढ़ने का अनुमान लगाया गया था।

भारत में प्रसंस्कृत पनीर के प्रमुख ब्रांड अमूल, विजया, वेरका, वाडीलाल, क्राफ्ट और ब्रिटानिया हैं। वहीं डेयरी व्हाइटनर और क्रीमर का बाजार – 3,000 मिलियन का है। नेस्ले जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों और ब्रिटानिया जैसी कंपनियों के अलावा, भारतीय उद्यमों ने भी उल्लेखनीय प्रगति की है। अमूल, सपन, विजया, मोहन, पराग जैसे नाम अपने डेयरी व्हाइटनर के कारण लोकप्रिय हैं। ये अधिकतर पाउच और टेट्रापैक में उपलब्ध हैं।

अमूल ने अपने व्हाइटनर पाउच के साथ शुरुआत की और 45% की बाजार हिस्सेदारी के साथ अग्रणी बनकर उभरा अमूल है, इसके बाद नेस्ले 23% के साथ दूसरे स्थान पर है। असेप्टिकली पैकड क्रीमर में उत्पाद को लंबी शेल्फ लाइफ प्रदान करने की तकनीक शामिल होती है। इसे चाय या कॉफी के कप में डालने के लिए तैयार छोटे कपों में पैक किया जाता है। क्रीमर ताजा दूध है जिसमें बढी हुई वसा सामग्री (12% तक) होती है और इसे अल्ट्रा उच्च तापमान (यूपचटी) से गुजरने के बाद सड़न रोकने वाला तरीके से पैक किया जाता है। नेस्ले इंडिया ने अपने 'एवरीडे' डेयरी व्हाइटनर के साथ अपने ब्रांड को अच्छी तरह से स्थापित कर लिया है। इसने अपने नेस्ले प्योर मिल्क और नेस्कैफे फ्रैपे के साथ भी बाजार में प्रवेश किया है।

जबकि सपन इसे "डेयरी स्पेशल" (चाय और कॉफी के लिए तत्काल दूध मिश्रण) के रूप में वर्णित करता है, विजया बाजार में 200 मिलीलीटर और 1 लीटर में बेचा जाने वाला एकमात्र यूपचटी प्रसंस्कृत दूध समरूप ब्रांड है। टेट्रा पैक। बाकी सभी अमूल, मीडो, मोहन, पराग और श्वेता डेयरी व्हाइटनर पाउडर के रूप में हैं। मोहन अपने डेयरी प्रकार के उत्पाद के साथ-साथ एक गैर-डेयरी व्हाइटनर भी बेचता है।

डेयरी व्हाइटनर/क्रीमर्स के प्रमुख खिलाड़ियों में नेस्ले, अमूल, ब्रिटानिया, डायनामिक्स डेयरी, स्टर्लिंग एग्रो, हरियाणा मिल्क फूड्स, मोहन फूड, मॉडर्न डेयरी, के डेयरी शामिल हैं जबकि प्रमुख ब्रांडों में अमूल, सपन, विजया स्प्रे, मीडो, मोहन, पराग, श्वेता, मलकाना, गगन, व्हाइट मैजिक, एवरी डे शामिल हैं।

## मुख्य डेयरी उत्पादाक

स्मिथकलाइन, बीचम कंज्यूमर हेल्थकेयर, नेस्ले इंडिया और हेंज इंडिया बडी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में से हैं जो उच्च मूल्य वाले दूध उत्पादों के बाजार पर हावी हैं। अन्य खिलाड़ियों में इंडियाना डेयरी स्पेशलिटीज, जगतजीत इंडस्ट्रीज लिमिटेड और विभिन्न अन्य राज्य सहकारी समितियाँ शामिल हैं।

कुछ डेयरी संयंत्र व्यावसायिक पैमाने पर मिठाईके उत्पादन में शामिल हैं। कुछ राष्ट्रीय ब्रांड जैसे हल्दीराम, बीकानेरवाला, केसी दास, चितालेस, गंगूराम, बृजवासी, अग्रवाल स्वीट्स आदि को व्यापक स्वीकृति मिल रही है।

## डेयरी उत्पादों का निर्यात

2000 के बाद से, भारत के दूध पाउडर, कैसिइन, मट्टा उत्पाद और घी ने वैश्विक बाजारों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना शुरू कर दिया है। स्वदेशी दूध उत्पाद और मिठाइयाँ दुनिया भर में फैली जातीय आबादी के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। इसलिए इनकी निर्यात मांग काफी बढ़ गई है। वर्तमान में घी नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, मध्य पूर्व के देशों और उत्तरी अमेरिका, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका को मामूली मात्रा में निर्यात किया जा रहा है।

देश से निर्यात किए जाने वाले प्रमुख डेयरी उत्पादों में स्किम्ड मिल्क पाउडर, संपूर्ण दूध पाउडर, घी, मक्खन तेल, बच्चों के लिए दूध का भोजन, मक्खन, बच्चों के लिए दूध, दूध और क्रीम आदि शामिल हैं। 2001 के बाद से डेयरी उत्पादों का निर्यात मात्रा के संदर्भ में 25% और मूल्य के संदर्भ में 28% प्रति वर्ष की दर से बढ़ रहा है। भारत ने 1,205.4 करोड़ (एपीडा) मूल्य के 66,424 मिलियन टन डेयरी उत्पादों का निर्यात किया। जिन देशों में हमारे भारतीय डेयरी उत्पाद निर्यात किए जाते हैं उनमें बांग्लादेश, अरब गणराज्य, संयुक्त अरब अमीरात, पाकिस्तान, नेपाल और भूटान शामिल हैं। दूध पाउडर, पैकेज्ड दूध, मक्खन, घी, पनीर और पीने के लिए पढ़ने योग्य दूध उत्पादों जैसे मूल्यवर्धित दूध उत्पादों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण निवेश अवसर मौजूद हैं।

## अनुमानित डेयरी उद्योग परिदृश्य

एसोसिएटेड चौबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एसोचौम) के अनुसार, भारतीय डेयरी उद्योग का मूल्य 2015 तक 5 लाख करोड़ तक पहुंच गयी थी, अवधि के अंत में दूध उत्पादन 190-200 मिलियन टन था। भारतीय डेयरी उद्योग प्रति वर्ष 10.0% की दर से बढ़ रहा है।

## भारतीय डेयरी उद्योग की समस्याएँ एवं संभावनाएँ

दुनिया में सबसे बड़ा दूध उत्पादक होने के बावजूद, दुधारु पशुओं की उत्पादकता में सुधार की पर्याप्त गुंजाइश है। यह संतान परीक्षण, दुधारु पशुओं को पौष्टिक आहार खिलाने, पशु के स्वास्थ्य की देखभाल करने, क्रॉसब्रीडिंग इत्यादि के माध्यम से किया जा सकता है। देश में उत्पादित कुल दूध का केवल 30% ही संगठित डेयरी उद्योग द्वारा संसाधित किया जा रहा है, लगभग 10 वर्षों की अवधि में इस स्तर को कम से कम 50% के स्तर तक बढ़ाने की पर्याप्त गुंजाइश मौजूद है। दूध की सूक्ष्मजीवी गुणवत्ता संतोषजनक नहीं है। दुग्ध उत्पादकों के बीच 'स्वच्छ दूध उत्पादन' के लिए जागरूकता पैदा की जानी है। 'खुले दूध' की बिक्री को विशेष रूप से कानून के माध्यम से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। डेयरी उद्योग में दूध और दूध उत्पादों में मिलावट, 'संश्लेषित दूध' तैयार करने जैसी गड़बड़ियों पर पूरी तरह से अंकुश लगाने की जरूरत है। स्वदेशी डेयरी आधारित मिठाइयों की बेहतर पैकेजिंग समय की मांग है। स्वच्छता, ऊर्जा की आवश्यकता और पर्यावरण सुरक्षा के मुद्दों को ध्यान में रखते हुए, स्वदेशी दूध की मिठाइयों के निर्माण में

मशीनीकरण अभी भी पूर्ण नहीं किया गया है। दूध को एंटीबायोटिक्स, हार्मोन और कीटनाशकों से मुक्त बनाने की जरूरत है। जैविक दूध के उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए। राबोबैंक को उम्मीद है कि अगले 4-5 वर्षों में दही, पनीर, चीज, आइसक्रीम और शिशु आहार जैसे मूल्यवर्धित डेयरी उत्पाद 20-30% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ेंगे। दुनिया की शीर्ष 20 डेयरी कंपनियों में से छह पहले ही किसी न किसी तरह से भारत में कदम रख चुकी हैं। डैनोन फूड एंड बेवरेजेज (इंडिया) ने भारत में उत्पादन आधार स्थापित किया है। न्यूजीलैंड की फोंटेसा स्थानीय साझेदारों के साथ गठजोड़ की संभावना तलाश रही है। कैफे कॉफी डे, पिज्जा हट, डोमिनोज, मैक डोनाल्ड्स जैसी खाद्य और कॉफी श्रृंखलाओं की वृद्धि से मूल्यवर्धित डेयरी उत्पादों की खपत बढ़ाने में मदद मिलने की उम्मीद है।

कस्टर्ड, डेसर्ट, पुडिंग, सॉस, मूस, मिश्रित दही और अमृत सहित मूल्यवर्धित उत्पादों के लिए डेयरी उद्योग के सामने काफी संभावनाएं दिखाई दे रही हैं। उच्च प्रयोज्य आय और अधिक स्वास्थ्य जागरूकता के साथ बढ़ती जनसंख्या के कारण शहरी

केंद्रों में प्रसंस्कृत और पैकेज्ड डेयरी उत्पादों की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिल रही है। निजी क्षेत्र उचित डेयरी उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन बुनियादी ढांचे को विकसित करने के अलावा उत्पादकता बढ़ाने, मवेशियों के लिए प्रजनन सुविधाएं प्रदान करने और डेयरी पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार के लिए उन्नत तकनीकों को नियोजित करके उत्पादन की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

दूध उत्पादन के मामले में भारत अब निर्विवाद रूप से दुनिया का सबसे बड़ा डेयरी उद्योग है। 2021-21 के दौरान भारत ने करीब 221.1 मिलियन टन दूध का उत्पादन किया, जो अमेरिका की तुलना में 50% के करीब और बहुप्रचारित नए विकास चौपियन चीन से तीन गुना से अधिक है। उचित रूप से, भारत किसी भी विश्व डेयरी उद्योग की सबसे बड़ी निर्देशिका या विश्वकोश भी तैयार करता है। भारत में डेयरी क्षेत्र ने पिछले दशक में उल्लेखनीय विकास दिखाया है और भारत अब दुनिया में दूध और मूल्यवर्धित दूध उत्पादों के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक बन गया है।

**तालिका 1:** अलग-अलग उत्पाद

|                        |                        |
|------------------------|------------------------|
| ताजा मकखन              | छाछ                    |
| बटर आयल                | ताजा पनीर              |
| पाउडर में दूध और क्रीम | शिशुओं के लिए दूध      |
| अन्य वसा               | मलाई उतरे दूध का चूर्ण |
| अन्य दुग्ध शक्ति       | वसायुक्त दूध           |
| घी                     |                        |

### उत्पादन के क्षेत्र

भारत में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान और तमिलनाडु डेयरी उत्पादों के प्रमुख उत्पादन क्षेत्र हैं।

### भारत तथ्य और आंकड़े

भारत का डेयरी उत्पादों का निर्यात विश्व में 67,572.99 मीट्रिक टन है, जिसका मूल्य रु. वर्ष 2022-23 के दौरान 2,269.85 करोड़/ 284.65 अमेरिकी डॉलर मिलियन है।

**प्रमुख निर्यात गंतव्य (2022-23):** बांग्लादेश संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, अमेरिका और भूटान।

देश का दूध उत्पादन निर्यात से जुड़े विभिन्न सरकारी फायदों के कारण चालू वित्त वर्ष में 18 करोड़ टन के स्तर को पार कर सकता है। एक रिपोर्ट में यह अनुमान व्यक्त किया गया है। राबो बैंक ने 2021 की चौथी तिमाही के लिये डेयरी क्षेत्र की तिमाही रिपोर्ट में कहा, "देश उच्च दूध उत्पादन के मौसमी दौर में आ रहा है जो तीन से चार महीने चलने वाला है और इसमें विभिन्न क्षेत्र शामिल होंगे। हम घरेलू दूध आपूर्ति में वृद्धि देखने वाले हैं जिसका परिणाम अतिरिक्त सममितिय दूध प्रसंस्करण (एसएमपी) विनिर्माण एवं भंडारण के रूप में होगा।" रिपोर्ट में कहा गया, सरकार ने अतिरिक्त एसएमपी निर्यात की स्थिति में 20 प्रतिशत निर्यात छूट बढ़ा दिया है। इसके साथ ही गुजरात और महाराष्ट्र द्वारा दिये जाने वाले निर्यात लाभ तथा महाराष्ट्र सरकार द्वारा किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य भी दिया जा रहा है। रिपोर्ट में कहा गया कि ये लाभ मार्च 2019 तक बढ़ाये जाने वाले हैं। निर्यात के बारे में बैंक ने कहा कि भारत ने 2018-19 के पूर्वार्ध में 9,600 टन दूध का निर्यात किया है। पिछले साल की समान अवधि में यह 4,750 टन था। इस साल सितंबर महीने में ही 6,150 टन दूध का निर्यात हुआ है। अप्रैल दिसंबर-2018 के दौरान एसएमपी निर्यात 20 हजार टन के पार हो जाने वाला है।

उद्योग जगत का आकलन है कि मार्च 2019 तक भारत 35-40 हजार टन एसएमपी का निर्यात करेगा। गंगा डेयरी लिमिटेड एक गैर-सरकारी कंपनी है, जिसे 17 जनवरी, 1997 को निगमित किया गया था। यह एक सार्वजनिक असूचीबद्ध कंपनी है और इसे 'शेयरों द्वारा सीमित कंपनी' के रूप में वर्गीकृत किया गया है। गंगा डेयरी लिमिटेड पंजीकृत पता श्री कृष्णा नगर, पीओ- बेगुसराय पीएस-बेगुसराय बेगुसराय बीआर 000000 IN है। कंपनी की अधिकृत पूंजी 1000.0 लाख रुपये है और इसकी 99.199905% चुकता पूंजी यानी 992.0 लाख रुपये है।

**तालिका 2:** बी0 एम0 सी0 एवं उसके अन्तर्गत आने वाले सोसाईटी की संख्या

| क्रम संख्या | बी0 एम0 सी0 | सोसाईटी की संख्या |
|-------------|-------------|-------------------|
| 1           | रमजानपुर    | 20                |
| 2           | खोखसाहा     | 142               |
| 3           | इलमाश नगर   | 68                |
| 4           | सूर्यगढ़ा   | 88                |
| 5           | नंदीनी      | 92                |
| 6           | तारा        | 89                |
| 7           | बौहारा      | 72                |
| 8           | गौछारी      | 114               |
| 9           | पातेपुर     | 32                |
| 10          | हसनपुर      | 119               |
| 11          | नरघोधी      | 48                |
| 12          | पहसारा      | 95                |
| 13          | विरनालखनपुर | 67                |
| 14          | सीहो        | 52                |
| 15          | जनदाहा      | 30                |
| 16          | कोनैला      | 72                |
| कुल         | 16          | 1200              |

**तालिका 3:** बी0 एम0 सी0 अनुसार दुध संग्रहण (लीटर में)

| क्रम संख्या | बी0 एम0 सी0 | दुध संग्रहण (लीटर में) |
|-------------|-------------|------------------------|
| 1           | रमजानपुर    | 25000                  |
| 2           | खोखसाहा     | 30000                  |
| 3           | इलमाश नगर   | 18000                  |
| 4           | सूर्यगढ़ा   | 15000                  |
| 5           | नंदीनी      | 15000                  |
| 6           | तारा        | 12000                  |
| 7           | बौहारा      | 12000                  |
| 8           | गौछारी      | 12000                  |
| 9           | पातेपुर     | 11000                  |
| 10          | हसनपुर      | 10000                  |
| 11          | नरघोधी      | 10000                  |
| 12          | पहसारा      | 9000                   |
| 13          | विरनालखनपुर | 9000                   |
| 14          | सीहो        | 9000                   |
| 15          | जनदाहा      | 8000                   |
| 16          | कोनैला      | 8000                   |
| कुल         | 16          | 188000                 |

**तालिका 4:** गंगा डेयरी के प्लान्ट एवं उसकी क्षमता

| प्लान्ट          | क्षमता (लीटर में) प्रति दिन |
|------------------|-----------------------------|
| रमजानपुर प्लान्ट | 4 लाख लीटर                  |
| किसनगंज          | 50 हजार लीटर                |

**गंगा डेयरी के उत्पाद**

पोली पैकड मिल्क, प्लेन बटर या वाईट मिल्क 20 किलोग्राम पैकेट, मिल्क पाउडर, फूल क्रीम मिल्क पाउडर, डेयरी पाईटर, दही, लस्सी, पनीर, खोआ, रस्मुल्ला, गुलाबजामुन, चमचम, रबड़ी, आईस्क्रीम और कैंडी

**तालिका 5:** गंगा डेयरी का वर्षवार कुल राजस्व एवं लाभ (रु0 में)

| वित्तीय वर्ष | कुल राजस्व | शुद्ध लाभ |
|--------------|------------|-----------|
| 2018-19      | 2113444959 | 17289116  |
| 2019-20      | 2178985433 | 19540618  |
| 2020-21      | 1904810207 | 17746901  |
| 2021-22      | 2073487296 | 20584245  |
| 2022-23      | 2642499279 | 29200153  |

इस प्रकार अगर गंगा डेयरी के पाँच साल में लाभ वृद्धि की बात करें तो कुल 68.89 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। कुल राजस्व की बात करें तो उसमें पिछले पाँच साल में 25.03 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस प्रकार राजस्व की तुलना में लाभ में दोगुणे से भी अधिक कि वृद्धि दर्ज कि गई। अब अगर हम पिछले पाँच वर्षों का प्रति वर्ष राजस्व एवं लाभ के वृद्धि पर नजर डाले तो

**तालिका 6:** गंगा डेयरी का वर्षवार कुल राजस्व एवं लाभ (प्रतिशत में)

| वित्तीय वर्ष  | कुल राजस्व                 | शुद्ध लाभ               |
|---|----------------------------|-------------------------|
| 2018-19 की तुलना में<br>2019-20 में                 | 3.10 प्रतिशत<br>की वृद्धि  | 3.10 प्रतिशत की वृद्धि  |
| 2019-20 की तुलना में<br>2020-21 में                 | 12.58 प्रतिशत<br>की कमी    | 9.18 प्रतिशत की कमी     |
| 2020-21 की तुलना में<br>2021-22 में                 | 8.85 प्रतिशत<br>की वृद्धि  | 15.99 प्रतिशत की वृद्धि |
| 2021-22 की तुलना में<br>2022-23 में                 | 27.44 प्रतिशत<br>की वृद्धि | 41.86 प्रतिशत की वृद्धि |
| 2018-19 से तुलना में<br>2022-23 में (पाँच वर्ष में) | 25.03 प्रतिशत<br>की वृद्धि | 68.89 प्रतिशत की वृद्धि |

इस प्रकार स्पष्ट है कि गंगा डेयरी का कुल राजस्व और लाभ में लगातार वृद्धि हो रही है केवल 2020-21 में कोविड -19 के दौर में माँग के गिरावट के चलते कुल राजस्व और लाभ दोनों में कमी आई।

**निष्कर्ष**

- खोआ से बनी मिठाइयों की कीमत 1,30,000 करोड़ से ज्यादा आंकी गई है।
- देश में लगभग 45,000 मिलियन मूल्य का लगभग 9,00,000 टन खोआ का उत्पादन होता है।
- भारत में 6,000 मिलियन मूल्य का लगभग 1,20,000 टन छेना का उत्पादन किया जाता है। खोआ से बनी मिठाइयों की कीमत 1,30,000 करोड़ से ज्यादा हो सकती है।
- लगभग 15 संयंत्रों ने निरंतर खोआ बनाने वाली मशीन का उपयोग करके 1-4 टन के दैनिक उत्पादन के साथ खोआ का औद्योगिक उत्पादन शुरू किया है।
- भारत में लगभग 9,00,000 टन घी का उत्पादन होता है जिसका मूल्य 85,000 मिलियन है।
- भारत का डेयरी उत्पादों का निर्यात विश्व में 67,572.99 मीट्रिक टन है, जिसका मूल्य रु. वर्ष 2022-23 के दौरान 2,269.85 करोड़/ 284.65 अमेरिकी डॉलर मिलियन है
- भारत में प्रसंस्कृत पनीर के प्रमुख ब्रांड अमूल, विजया, वेरका, वाडीलाल, क्राफ्ट और ब्रिटानिया हैं।
- डेयरी व्हाइटनर/क्रीमर्स के प्रमुख खिलाड़ियों में नेस्ले, अमूल, ब्रिटानिया, डायनामिक्स डायरी, स्टर्लिंग एग्री, हरियाणा मिल्क फूड्स, मोहन फूड, मॉडर्न डेयरी, के डेयरी शामिल हैं जबकि प्रमुख ब्रांडों में अमूल, सपन, विजया स्प्रै, मीडो, मोहन, पराग, श्वेता, मलकाना, गगन, व्हाइट मैजिक, एवरी डे शामिल हैं।
- स्मिथक्लाइन, बीचम कंज्यूमर हेल्थकेयर, नेस्ले इंडिया और हेंज इंडिया बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में से हैं जो उच्च मूल्य वाले दूध उत्पादों के बाजार पर हावी हैं। अन्य खिलाड़ियों में इंडियाना डेयरी स्पेशलिटीज, जगतजीत इंडस्ट्रीज लिमिटेड और विभिन्न अन्य राज्य सहकारी समितियाँ शामिल हैं।
- राष्ट्रीय ब्रांड जैसे हल्दीराम, बीकानेरवाला, केसी दास, चितालेस, गंगूराम, बृजवासी, अग्रवाल स्वीट्स आदि को व्यापक स्वीकृति मिल रही है।
- भारत के दूध पाउडर, कैसिइन, मट्टा उत्पाद और घी ने वैश्विक बाजारों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना शुरू कर दिया है। स्वदेशी दूध उत्पाद और मिठाइयों दुनिया भर में फैली जातीय आबादी के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। इसलिए इनकी निर्यात मांग काफी बढ़ गई है। घी नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, मध्य पूर्व के देशों और उत्तरी अमेरिका, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका को मामूली मात्रा में निर्यात किया जा रहा है।
- उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान और तमिलनाडु डेयरी उत्पादों के प्रमुख उत्पादन क्षेत्र हैं।

**सुझाव**

- दुधारू पशुओं की उत्पादकता में सुधार की जानी चाहिए।
- संतान परीक्षण, दुधारू पशुओं को पौष्टिक आहार खिलाने, पशु के स्वास्थ्य की देखभाल करने, क्रॉसब्रीडिंग इत्यादि पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- देश में उत्पादित कुल दूध का केवल 30% ही संगठित डेयरी उद्योग द्वारा संसाधित किया जा रहा है, जिसे

निर्धारित समयवधि में कम से कम 50% के स्तर तक बढ़ाने की के लिए प्रयास किया जाना चाहिए है।

- दूध की सूक्ष्मजीवी गुणवत्ता सुधार पर बल देना चाहिए।
- दुग्ध उत्पादकों के बीच 'स्वच्छ दूध उत्पादन' के लिए जागरूकता पैदा की जानी चाहिए।
- 'खुले दूध' की बिक्री को विशेष रूप से कानून के माध्यम से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।
- डेयरी उद्योग में दूध और दूध उत्पादों में मिलावट, 'संश्लेषित दूध' तैयार करने जैसी गड़बड़ियों पर पूरी तरह से अंकुश लगाने की जरूरत है।
- स्वदेशी डेयरी आधारित मिठाइयों की बेहतर पैकेजिंग पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- स्वच्छता, ऊर्जा की आवश्यकता और पर्यावरण सुरक्षा के मुद्दों को ध्यान में रखते हुए, स्वदेशी दूध की मिठाइयों के निर्माण में मशीनीकरण पर बल दिया जाना चाहिए।
- दूध को एंटीबायोटिक्स, हार्मोन और कीटनाशकों से मुक्त बनाने की जरूरत है।
- जैविक दूध के उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए।

### संदर्भ ग्रंथ

1. फातिमा, डॉ. सनीम और अख्तर, मोहम्मद वसीम (अक्टूबर 2014). बिहार के बेगूसराय जिले में डेयरी उद्योग के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण, बिहार, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लीकेशन या इनोवेशन इन इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट (आईजेएआईईएम), खंड 3, अंक 10, पृ. 130–133, अक्टूबर 2014 आईएसएसएन 2319–4847,
2. रुद्र दत्त और सुंदरम, केपीएम (2011). पशुपालन और डेयरी विकास, भारतीय अर्थव्यवस्था, 62वां संस्करण, एस.चंद एंड कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. 553–555.
3. सिंह, धीरज के. (2020). बिहार, भारत में डेयरी किसानों की तकनीकी दक्षता: स्थिति और निर्धारक, *Agricultural Economics Research Review* 33½ p. 81&86] DOI: 10-5958@0974&0279-00009-9
4. यू एम शाह " डेयरी डवलपमेंट इन इंडिया: को-ऑपरेटिव शो द वे" फरवरी, 2007 वॉल्यूम 44 नं0 8 पृ0 342
5. डी डब्लू एटवुड एव बी एस बाविस्कर " हू शेयश को-ऑपरेटिव एण्ड रूरल डवलपमेंट" नई दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998, पृ0 328–391
6. वी के0 दूबे " ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन में डेयरी समितियाँ" अक्टूबर 1995 खंड 34 नं0 4 पृ0 2–113
7. रंजीत कुमार एवं ए0 के शर्मा, " नालंदा जिले में ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर डेयरी सहकारी समितियों का प्रभाव— एक केस स्टडी" भारतीय सहकारी समीक्षा, जनवरी 1999 खंड 36 नं0 –3 पृ0 201–208
8. बी0 सुब्बालक्ष्मी " डेयरी फार्मिंग की लाभप्रदता: एक केस स्टडी किसान विश्व जून 1998 खंड 25 नं0 6 पृ0 35–37